गणिनी आर्यिका विधान

भगवान श्री ऋषभदेव के समवसरण की प्रथम गणिनी ब्राह्मी माता

-रचयित्री-
गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 490

गणिनी आर्यिका विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

ऋषभगिरि मांगीतुंगी तीर्थ पर 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक के प्रसंग में सप्तम पट्टाचार्य श्री अनेकांतसागरजी महाराज एवं दिव्यशक्ति परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ सानिध्य में आयोजित पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकाश्री चन्दनामती माताजी के 28वें आर्यिका दीक्षा दिवस श्रावण शुक्ला ग्यारस (14 अगस्त 2016) के उपलक्ष्य में प्रकाशित।

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर निर्वाण संवत् 2516	मूल्य
1100 प्रतियाँ	श्रावण शु. ग्यारस	20/-रु.
	14 अगस्त 2016	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

——— सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन ———

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस बीसवीं सदी में नारियों में सर्वप्रथम ग्रंथ लेखन का कार्य करके 400 ग्रंथों का लेखन करके साहित्य भंडार को समृद्ध करने में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। अपने 63 वर्ष के दीक्षित जीवन में निरन्तर श्रुत की आराधना करने वाली पूज्य माताजी की लेखनी अभी भी रुकी नहीं है तथा 82 वर्ष की अवस्था में भी लेखन कार्य करके नित्य नयी कृतियाँ उनकी लेखनी से प्रसूत हो रही हैं, जिनमें विभिन्न स्तोत्र पाठ, स्वाध्याय के ग्रंथ एवं पूजा विधान आदि हैं। भक्ति मार्ग को प्रशस्त करने वाली पूजाओं में भी पूज्य माताजी उस अनुयोग संबंधी संपूर्ण विषयवस्तु को गागर में सागर की तरह समाहित करने में अत्यन्त निष्णात हैं। माताजी द्वारा रचित अनेक छोटे-बड़े विधानों को करके लोग भक्ति सरिता में अवगाहन करके आनंद की अनुभूति करते हैं। आचार्यों ने श्रावकों के षट्कर्तव्य बतलाए हैं—

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थाणां, षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप एवं दान गृहस्थों को प्रतिदिन करते रहना चाहिए जिससे उनका गृहस्थ धर्म सार्थक माना है।

हस्तिनापुर में रचा हुआ यह **'गणिनी आर्यिका विधान'** जिसके छपने का योग मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर आया है। ऋषभगिरि मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक पंचकल्याणक के बाद 18 फरवरी 2016 से अखण्ड अभी तक चल रहा है। भक्तों की यही भावना एवं मांग है कि जब तक माताजी मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर विराजमान हैं तब तक अर्थात् दीपावली तक यह महामस्तकाभिषेक चलता रहे, जिससे सभी भक्तों को विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा का प्रथम महामस्तकाभिषेक करने का अवसर प्राप्त हो सके, क्योंकि यह महामस्तकाभिषेक पूर्ण होने के बाद पुनः 6 वर्ष के पश्चात् ही महामस्तकाभिषेक का अवसर प्राप्त होगा।

पूज्य माताजी नित्य नई रचनाएँ समाज को प्रदान करती रहती हैं। सरस्वती की प्रतिकृति, दिव्यशक्ति पूज्य माताजी के दीर्घ जीवन की कामना करते हुए यही मंगल भावना है कि यह विधान आप सभी के लिए मंगलकारी हो।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

अनादिकाल से चौबीस तीर्थंकरों के समवसरण में आर्यिकाएँ हुई हैं और आगे भी होती रहेंगी। मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका को चतुर्विध संघ कहते हैं। दिगम्बर जैनधर्म में जिस प्रकार से मुनि पूज्य हैं उसी प्रकार से आर्यिका पूज्य हैं। जैसे मुनियों के 28 मूलगुण होते हैं, उसी प्रकार आर्यिकाओं के भी 28 मूलगुण होते हैं। आर्यिकाओं की सारी चर्या मुनि के समान होती है, मात्र एक साड़ी धारण करना और बैठकर करपात्र में आहार करना इतना अन्तर है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, दिव्यशक्ति, 400 से अधिक ग्रंथों की लेखिका परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने वर्तमान में उपलब्ध समस्त जैनागम का स्वाध्याय, मनन, चिंतन करते हुए ग्रंथों का लेखन एवं विधान आदि की रचना की है।

'गणिनी आर्यिका विधान' में सर्वप्रथम पूज्य माताजी ने मंगलाचरण करते हुए गणिनी श्री ब्राह्मी माता की संस्कृत में स्तुति लिखी है—

सम्यग्दर्शनसंशुद्धां, श्रमणीं श्रुतशालिनीं।
श्री ब्राह्मीमार्यिकां वंदे, गणिनी गुणशालिनीं।।

24 तीर्थंकरों के समवसरण में गणिनी माता सहित पचास लाख, छप्पन हजार, दो सौ आर्यिकाएँ थीं, उन सभी आर्यिकाओं को मेरा वन्दामि।

पूजा नं 1 **'तीर्थंकर समवसरण पूजा'** में समवसरण में विराजमान 24 तीर्थंकरों की पूजा है। इस पूजा की जयमाला में भगवान के समवसरण का बहुत ही सुन्दर वर्णन है। इसमें लिखा है—

प्रभु समवसरण में चउज्ञानी, गणधर सप्तर्द्धि समन्वित हैं।
सब सातों विध मुनिराज वहाँ, मूलोत्तर गुण से मंडित हैं।।
गणिनी एकादशांग ज्ञानी, प्रमुखा व्रतिका आर्यिका वहाँ।
श्रावक व श्राविकाएँ सुरगण, जिनवर भक्ती में लीन वहाँ।।

पूजा नं. 2 **'गणिनी आर्यिका पूजा'** में 24 तीर्थंकरों के समवसरण में स्थित ब्राह्मी गणिनीप्रमुख सहित सर्व आर्यिकाओं की पूजा है। इस पूजा में प्रथम वलय में जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की आर्यिकाओं के 24 अर्घ्य हैं। इसमें पूर्णार्घ्य में जम्बूद्वीप सम्बन्धी भरतक्षेत्र के चतुर्थकाल से पंचमकाल पर्यंत ब्राह्मी गणिनीप्रमुख आर्यिका से लेकर अन्तिम सर्वश्री आर्यिका पर्यंत समस्त आर्यिकाओं को भी अर्घ्य चढ़ाया है।

द्वितीय वलय में जम्बूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र की आर्यिकाओं के 2 अर्घ्य हैं। इसमें प्रथम अर्घ्य में 24 तीर्थंकरों के समवसरण में स्थित गणिनीप्रमुख सर्व आर्यिकाओं का

अर्घ्य एवं द्वितीय अर्घ्य में ऐरावत क्षेत्र के चतुर्थकाल से पंचमकाल पर्यंत समस्त गणिनी प्रमुख आर्यिकाओं को अर्घ्य चढ़ाया है।

तृतीय वलय में जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र की आर्यिकाओं के 32 अर्घ्य हैं। इसमें विदेहक्षेत्र के 32 विदेह देश के 32 आर्यखण्ड में स्थित 32 नगरियों के गणिनीप्रमुख आर्यिका सहित सर्व आर्यिकाओं को अर्घ्य चढ़ाया है। जैसे कि—

कच्छा विदेह के आर्यखंड में, क्षेमा नगरी रजधानी।
उस शाश्वत कर्मभूमि में नित, तीर्थंकर होते शिवगामी।।
मुनिगण होते गणिनी माता, आर्यिकायें होती रहती हैं।
हम उनको पूजें अर्घ्य चढ़ा, संयम की लब्धि मिलती है।।

चतुर्थवलय में 170 कर्मभूमि की आर्यिकाओं के 170 अर्घ्य हैं। जैसेकि—

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसवार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप सम्बन्धी आर्यिकाओं के 34 अर्घ्य, पूर्व धातकीखण्डद्वीप सम्बन्धी आर्यिकाओं के 34 अर्घ्य, पश्चिम धातकीखण्डद्वीप सम्बन्धी आर्यिकाओं के 34 अर्घ्य, इसी तरह पूर्व पुष्करार्ध एवं पश्चिम पुष्करार्ध सम्बन्धी आर्यिकाओं के 34-34 अर्घ्य, सब मिलाकर 34 + 34 + 34 + 34 + 34 = 170 अर्घ्य हैं।

इस विधान में 2 पूजा, कुल मिलाकर 24 + 2 + 32 + 170 = 228 अर्घ्य, 10 पूर्णार्घ्य एवं 2 जयमाला हैं।

इस विधान की जयमाला में पूज्य माताजी ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में आर्यिकाओं के विषय में वर्णन करते हुए लिखा है–

एक साड़ी परिग्रह रहा शेष है।
केश लुंचन करो आर्यिका वेश है।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं करूँ मात ! वंदामि तुमको यहाँ।।

अन्त में प्रशस्ति, गणिनी आर्यिका विधान की आरती, गणिनी ज्ञानमती माताजी की वैराग्य भावना एवं भजन हैं।

यह विधान भी अपने आप में महिमापूर्ण विधान है। इस विधान को करके सभी महिलाएँ यह भावना भाएं कि हम भी एक दिन आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर संयम को धारण करके परम्परा से मोक्षपद को प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ पूज्य गणिनी माता के चरणों में मेरा बारम्बार वन्दामि।

दो शब्द

—आर्यिका सुव्रतमती

स्वदोष–शान्त्यावहितात्मशांतिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेश–भयोपशान्त्यै शांतिर्जिनो मे भगवान्शरण्यः।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं, इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि, वर्तमान कालीन पिच्छीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित, परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना की है। प्रतिक्षण पूज्य माताजी की यह भावना रहती है कि किस तरह से मैं वर्तमान में सभी भव्य जीवों को आगम के ज्ञान से, पूर्वाचार्यों की वाणी से सिंचित करूँ।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम हैं। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पंक्तियों को पढ़ते हैं तो वे भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं। भक्ति में उनके पैर थिरकने लग जाते हैं और वे भक्ति भाव से पूजा कर असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। जब भगवान के दर्शनमात्र से पाप कर्म निर्जीण हो जाते हैं तो उनकी पूजा, भक्ति करने से तो विशेष पुण्य फल प्राप्त होता है।

धवला पु.–6 में आचार्य श्री वीरसेनस्वामी ने जिनबिम्ब दर्शन के महत्त्व का कितना सुन्दर वर्णन किया है–

दर्शनेन जिनेन्द्राणां पापसंघातकुंजरम्।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा।।

अर्थात् जिनेन्द्रों के दर्शन से पापसंघातरूपी कुंजर के सौ टुकड़े हो जाते हैं, जिस प्रकार कि वज्र के आघात से पर्वत के सौ टुकड़े हो जाते हैं।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति, पूजा विशेष फल को देने वाली है। पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिन्तामणि' नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, वाग्देवी, डी. लिट्, दिव्यशक्ति आदि अनेक उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए वरदान हैं। इस विधान की प्रूफ रीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूर कर शीघ्र ही श्रुतज्ञान, केवलज्ञान की प्राप्ति करावे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 400 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्मित 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेद शिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	गणिनी श्री ब्राह्मीमातुः स्तुतिः	2
3.	तीर्थंकर समवसरण पूजा	3
4.	गणिनी आर्यिका पूजा	8
5.	प्रथमवलय में– जम्बूद्वीप ऐरावतक्षेत्र की आर्यिकाओं के अर्घ्य (24 अर्घ्य)	10
6.	द्वितीय वलय में– जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की आर्यिकाओं के अर्घ्य (2 अर्घ्य)	16
7.	तृतीय वलय में– जम्बूद्वीप के विदेहक्षेत्र की आर्यिकाओं के अर्घ्य (32 अर्घ्य)	18
8.	चतुर्थ वलय में– 170 कर्मभूमि की आर्यिकाओं के 170 अर्घ्य	24
9.	जयमाला	39
10.	प्रशस्ति	42
11.	गणिनी आर्यिका विधान की आरती	43
12.	गणिनी ज्ञानमती माताजी की वैराग्य भावना	44
13.	भजन–वंदना करूँ मैं गणिनी ज्ञानमती की.....	48

विधान का मण्डल

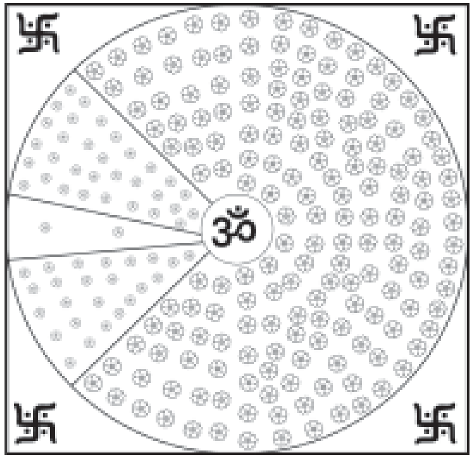

कुल अर्घ्य

प्रथम कोष्ठक में	-24
द्वितीय कोष्ठक में	-2
तृतीय कोष्ठक में	-32
चतुर्थ कोष्ठक में	-170
कुल-227 अर्घ्य	

कुल पूजा-2, अर्घ्य-228,
पूर्णार्घ्य-10, जयमाला-2

गणिनी आर्यिका विधान

मंगलाचरणम्

अर्हतः सौख्यदान् सर्वान्, सिद्धान् सिद्धिप्रदान् नुवे।
आचार्यान् पाठकान् साधून्, मार्गदांश्चापि संस्तुवे।।1।।

त्रैकालिकान् मुनीन् वन्दे–ऽनंतानंतान् त्रिशुद्धितः।
येषां भक्त्या तितीर्षामि, भवसागरदुस्तरम्।।2।।

एकादशांगविज्ञा या–स्तीर्थंकरसभास्थिताः।
गणिनीश्चार्यिकाः सर्वाः वन्दे रत्नत्रयाप्तये।।3।।

त्रैकालिकार्यिकाः सर्वाः, अनंतानंतमातरः।
तास्ता भक्त्या प्रवन्देऽहं, मूलोत्तरगुणाप्तये।।4।।

गणिनी श्री ब्राह्मीमातुः स्तुतिः

सम्यग्दर्शनसंशुद्धां, श्रमणीं श्रुतशालिनीं।
श्रीब्राह्मीमार्यिकां वंदे, गणिनीं गुणशालिनीं।।5।।

संसारदुःखतो भीत्वा, श्रीपुरुदेवमाश्रिता।
दीक्षां स्वीकृत्य मुक्त्यर्थं, ध्यानाध्ययनयोःरता।।6।।

रत्नत्रयपवित्रांगा, सन्महाव्रतधारिणीं।
समित्याचारसंसक्ता, मनोनिग्रहकारिणी।।7।।

पंचेन्द्रियजितावश्य – षट्क्रियादिषु तत्परा।
क्रोधाद्यरीन् तनूकर्त्री, मोहमायाविदूरगा।।8।।

पाणिपात्रपुटाहारा–मेकशाटकधारिणीं।
कायक्लेशतपोरक्तां, ब्राह्मीं च सुंदरीं स्तुवे।।9।।

उपवासावमौदर्य–रसत्यागतपांसि या।
कर्मारातीन् कृशीकर्तुं, व्यधत्त परया मुदा।।10।।

सद्धर्मामृतसंप्रीत्या, ब्रह्व्य आर्याः अपालयत्।
जगन्माता हितंकर्त्री, संस्तौमि तामहं मुदा।।11।।

परीषहमहाक्लेशा – दभीरुः कर्मसंगरे।
वीरांगनाऽप्यसौ पायात्, भवक्लेशभयाच्च मां।।12।।

वंदेऽहं संततं भक्त्या, श्रीब्राह्मीं सुंदरीमपि।
तीर्थकृत्कन्यकां धर्म–कन्यामिव जगन्नुतां।।13।।

रत्नत्रयस्य सिद्ध्यर्थं, त्वां महामातरं स्तुवे।
सम्यग्ज्ञानमतिर्मह्यं, भूयात् कैवल्यसौख्यदा।।14।।

–दोहा–

तीर्थंकर के समवसरण, में हैं गणिनी अम्ब।
पचास लक्ष छप्पन सहस, दो सौ आर्यिका वंद्य।।15।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं. १

तीर्थंकर समवसरण पूजा

–अथ स्थापना-शंभु छंद –

चौबीसों तीर्थंकर प्रभु को, मेरा शत शत वंदन है।
प्रभु के समवसरण को प्रणमन, गणधर गुरु को प्रणमन हैं।
सर्व साधुगण को भी वंदन, जिनप्रतिमा को वंदन हैं।
हम करते हैं विधिवत् जिनवर का, इत आह्वानन अर्चन है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-गीता छंद –

प्रभु चार गतियों में बहुत ही, घूमकर अब थक चुका।
इस हेतु तुम पद शरण लेकर, नीर से पूजूँ मुदा।।
चौबीस जिनवर पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन्द्रियादिक देह में, दुःख दाव से संतप्त हो।
प्रभु गंध से पद चर्चते तुम, पाद छाया सुलभ हो।।चौ.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिन्द्र से भि निगोद तक सुख दुःखमयी सब पद धरे।
अक्षय सुपद के हेतु भगवन् ! पुंज अक्षत के धरे।।
चौबीस जिनवर पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध अयश से खिन्न हो नहिं, स्वात्मगुण यश पा सका।
बहुविध महकते पुष्प सुंदर, अतः चरणों में रखा।।चौ.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू इमरती पूरियाँ, फेनी मलाई खीर से।
नहिं तृप्ति पाई इसलिये, नेवज चढ़ाऊँ प्रीति से।।चौ.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक अंधेरा दूर करता, एक कोठे का अरे।
तुम आरती करते सकल, अज्ञानतम हरता खरे।।चौ.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वरधूप खेते अग्नि में, सब कर्म भस्मीभूत हों।
निज आत्म समरस प्राप्त हो, फिर मोह बैरी दूर हों।।चौ.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम पिस्ता सेव केला, आम दाड़िम फल लिया।
बस मोक्षफल की आश लेकर, आपको अर्पण किया।।चौ.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प में, बहुरत्न आदि मिलाय के।
मैं अर्घ अर्पण करूँ प्रभु को, 'ज्ञानमति' हर्षाय के।।
चौबीस जिनवर पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्वसुख सम्पदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

अति अद्भुत लक्ष्मी धरें, समवसरण प्रभु आप।
तुम ध्वनि सुन भविवृंद नित, हरें सकल संताप।।1।।

–शंभु छंद–

जय तीर्थंकर प्रभु का वैभव, अंतर का अनुपम गुणमय है।
जो दर्शज्ञान सुख वीर्यरूप, आनन्त्य चतुष्टय गुणमय है।।
बाहर का वैभव समवसरण, जिसमें असंख्य रचना मानी।
गुरु गणधर भी वर्णन करते, थक जाते मनपर्यय ज्ञानी।।2।।

यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
सीढ़ी से ऊपर अधर भूमि, यह तीस कोश की गोल दिखे।।
यह भूमि कमल आकार कही, जो इन्द्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है।।3।।

पंकज के दल सम बाह्य भूमि, जो अनुपम शोभा धारे है।
इस समवसरण का बाह्य भाग, दर्पण तल सम रुचि धारे है।।
यह बीस हजार हाथ ऊँचा, शुभ समवसरण अतिशय शोभे।
एकेक हाथ ऊँची सीढ़ी, सब बीस हजार प्रमित शोभें।।4।।

अंधे पंगू रोगी बालक, औ वृद्ध सभी जन चढ़ जाते।
अंतर्मुहूर्त के भीतर ही, यह अतिशय जिन आगम गाते।।
इसमें शुभ चार दिशाओं में, अति विस्तृत महा वीथियाँ हैं।
वीथी में मानस्तंभ कहे, जिनकी कलधौत पीठिका हैं।।5।।

जिनवर से बारह गुणे तुंग, बारह योजन से दिखते हैं।
इनमें हैं दो हजार पहलू, स्फटिक मणी के चमके हैं।।
उनमें चारों दिश में ऊपर, सिद्धों की प्रतिमाएँ राजें।
मानस्तंभों की सीढ़ी पर, लक्ष्मी की मूर्ति अतुल राजें।।6।।

ये दूर-दूर तक गाँवों में, अपना प्रकाश फैलाते हैं।
जो इनका दर्शन करते हैं, वे निज अभिमान गलाते हैं।।
मानस्तंभों के चारों दिश, जलपूरित स्वच्छ सरोवर हैं।
जिनमें अतिसुंदर कमल खिले, हंसादि रवों से मनहर हैं।।7।।

प्रभु समवसरण में चउज्ञानी, गणधर सप्तर्द्धि समन्वित हैं।
सब सातों विध मुनिराज वहाँ, मूलोत्तर गुण से मंडित हैं।।
गणिनी एकादशांग ज्ञानी, प्रमुखा व्रतिका आर्यिका वहाँ।
श्रावक व श्राविकाएँ सुरगण, जिनवर भक्ती में लीन वहाँ।।8।।

सब प्रभु की दिव्यध्वनी सुनते, धर्मामृत पीते आनंदित।
सम्यग्दृष्टी सम्यग्ज्ञानी, निज मोक्ष मार्ग करते प्रशस्त।।

चिंतित फलदाता चिंतामणि, वांछित फलदाता कल्पतरू।
मैं पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ, निज आत्म सुधा का पान करूँ।।9।।
हे नाथ! कामना पूर्ण करो, निज चरणों में आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तब तक ही शरण मुझे लेवो।।
तब तक तुम चरण कमल मेरे, मन में नित सुस्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल 'ज्ञानमती', तब तक मम वच तुम गुण गावें।।10।।

–सोरठा –

गिनत न पावें पार, प्रभू आप गुणरत्न को।
नमूँ नमूँ शत बार, तीन रत्न के हेतु ही।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद –

जो भव्य समवसरण की, नित अर्चना करें।
वे सर्व सुगुण रत्न से, निज संपदा भरें।।
साक्षात् प्रभू दर्श करें, स्वात्म सुख भरें।
सज्ज्ञानमती से निजात्म, का दरश करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

गणिनी आर्यिका पूजा

–अथ स्थापना-शंभु छंद –

तीर्थंकरों के समवसृति में आर्यिकायें मान्य हैं।
ब्राह्मी प्रभृति से चंदना तक सर्व में हि प्रधान हैं।।
व्रतशील गुण से मंडिता इंद्रादि से पूज्या इन्हें।
आह्वान करके पूजहूँ त्रयरत्न से युक्ता तुम्हें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–गीता छंद

गंगा नदी का नीर शीतल, स्वर्ण झारी में भरूँ।
निज कर्ममल को धोवने हित, मात पद धारा करूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-चरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी चंदन सुगंधित, घिस कटोरी में भरूँ।
तुम पाद पंकज चर्चते, भवताप की बाधा हरूँ।।सद्धर्म.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-चरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अखंडित शालि तंदुल, धोय थाली में भरूँ।
तुम पाद सन्निध पुंज धरते, सर्व दुख का क्षय करूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका समूह! प्रमुखसर्वार्यिका-चरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली केवड़ा, अरविंद सुरभित पुष्प से।
तुम पाद कुसुमावलि किये, यश सुरभि फैले चहुँदिसे।।सद्धर्म.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-चरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक इमरती सेमई, पायस पुआ पकवान से।
तुम पाद पंकज पूजते, क्षुध रोग मुझ तुरतहिं नशे।।सद्धर्म.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-चरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती रजत दीपक, में जला आरति करूँ।
अज्ञानतम को दूर कर, निज ज्ञान की ज्योती भरूँ।।सद्धर्म.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-चरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध धूप सुगंध खेकर, कर्म अरि भस्मी करूँ।
तुम पाद पंकज पूजते, निज आत्म की शुद्धी करूँ।।सद्धर्म.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-चरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव अनार केला, आम फल को अर्पते।
निज आत्म अनुभव सुख सरस, फल प्राप्त हो तुम पूजते।।सद्धर्म.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-चरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध तंदुल पुष्प नेवज, दीप धूप फलादि से।
मैं अर्घ अर्पण करूँ माता!, आपको अति भक्ति से।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

व्रत गुण मंडित मात के, चरणों में त्रयबार।
शांतीधारा मैं करूँ, होवे शांति अपार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मल्लिका केवड़ा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि चरणों करत, करूँ स्वात्म श्रृंगार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रथम वलय में
जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की आर्यिकाओं के अर्घ्य
(24 अर्घ्य)

–सोरठा–

महाव्रतादी श्रेष्ठ, गुण भूषण को धारतीं।
पूजूँ भक्ति समेत, पुष्पांजलि करके यहाँ।।1।।

अथ प्रथमवलये मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

ऋषभदेव के समवसरण में, 'ब्राह्मी' गणिनी मानी हैं।
सर्व आर्यिका तीन लाख, पच्चास हजार बखानी हैं।।
रत्नत्रय गुणमणि से भूषित, शुभ्र वस्त्र को धारे हैं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती, भवि को भवदधि तारे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य ब्राह्मीगणिनीप्रमुखत्रयलक्षपंचाशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजित नाथ के धर्मतीर्थ में, व्रत समिती गुप्ती धारें।
सर्व आर्यिका तीन लाख, अरु बीस हजार धर्म धारें।।
मात 'प्रकुब्जा' गणिनी इनमें, धर्म धुरंधर नारी हैं।
इनकी पूजा वंदन भक्ति, सब जन को सुखकारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य प्रकुब्जागणिनीप्रमुखत्रयलक्षविंशतिसहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिन के समवसरण में, महाव्रतों से भूषित है।
तीन लाख अरु तीस हजार, आर्यिकायें गुण पूरित हैं।।
इनमें गणिनी 'धर्म श्री' माँ, धर्मवत्सला सुरवंद्या।
इनकी पूजा वंदन भक्ती, देती सुख परमानंदा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य धर्मश्रीगणिनीप्रमुखत्रयलक्षत्रिंशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन प्रभु धर्म सभा में, सर्व आर्यिकायें पूज्या।
तीन लाख अरु तीस सहस, छह सौ सब शील नियम युक्ता।।
इन सबकी 'मेरुषेणा' मां, गणिनी वत्सल गुणधारी।
इन सबकी पूजा भक्ती से, तरें भवोदधि नरनारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य मेरुषेणाप्रमुखत्रयलक्षत्रिंशत्सहस्रषट्शत-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति जिनेश्वर समवसरण में, तीन लाख अरु तीस सहस।
इन सब व्रतमंडितआर्या में, मात 'अनंता' प्रमुख बसत।।
लज्जा शील गुणों से पूरित, एकशाटिका धारी हैं।
ध्यान अध्ययन तपस्या में रत, इन पूजा गुणकारी हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य अनंतागणिनीप्रमुखत्रयलक्षत्रिंशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म प्रभू के धर्म तीर्थ में, धर्म मूर्तियाँ शोभे हैं।
चार लाख अरु बीस सहस, ये व्रती आर्यिकायें सब हैं।।

'रतिषेणा' माँ गणिनी इनमें, मानों जिनवर कन्या हैं।
जाती कुल से शुद्ध शील से, शुद्ध आर्यिका धन्या हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य रतिषेणागणिनीप्रमुखचतुर्लक्षविंशतिसहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व जिन समवसरण में, तीन लाख अरु तीस सहस।
'मीना ' गणिनी सहित आर्यिका, सब सद्धर्म सुता सदृश।।
संयमशील समिति गुणमंडित, समकित रत्न धरें शोभें।
इनकी पूजा करते सुर नर, पुनः न दुर्गति दुख भोगें।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य मीनागणिनीप्रमुखत्रयलक्षत्रिंशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रनाथ के समवसरण में, श्वेत वस्त्रधारी आर्या।
तीन लाख अस्सी हजार ये, इनमें 'वरुणा' प्रमुखार्या।।
लेश्या शुक्ल धरें ये श्रमणी, शुक्लगुणों से मंडित हैं।
जो भविजन इन पूजा करते, वे पद लहें अखंडित हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य वरुणागणिनीप्रमुखत्रयलक्षअशीतिसहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविधिनाथ के समवसरण में, 'घोषा' प्रमुख आर्यिका हैं।
तीन लाख अस्सी हजार, सब महाव्रतादि धारिका हैं।।
धर्म वत्सला धर्म मूर्तियाँ, धर्म ध्यान में तत्पर हैं।
धर्म प्राण जन इनको पूजें, सब सुख लहें निरंतर हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य घोषागणिनीप्रमुखत्रयलक्षअशीतिसहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतल जिन समवसरण में, प्रमुख आर्यिका 'धरणा' हैं।
ये तीन लाख अस्सी हजार, इनके वच अमृत झरना हैं।।
सब क्षमा मार्दव आर्जवादि, दश धर्मों को धारण करतीं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती, सब तन मन की व्याधी हरती।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य धरणागणिनीप्रमुखत्रयलक्षअशीतिसहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ के यहाँ एक लख, तीस सहस्र आर्यिका हैं।
इनमें गणिनी 'धारणीमात', ये रत्नत्रय त्रितय साधिका हैं।।
इस भव में स्त्रीलिंग छेद, इंद्रों का वैभव पाती हैं।
फिर आकर शिवपद प्राप्त करें, इन पूजा भव दुख घाती हैं।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य धारणीगणिनीप्रमुखएकलक्षत्रिंशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य के यहाँ साध्वियां, एक लाख छह सहस कहीं।
इनमें 'वरसेना' गणिनी हैं, सब महाव्रतों को पाल रहीं।।
ये ग्यारह अंग पढ़ें रुचि से, शिष्याओं को शिक्षा देतीं।
जिनवर भक्ती में नित तत्पर, इनकी पूजा दुःख हर लेती।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य वरसेनागणिनीप्रमुखएकलक्षषट्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ के निकट साध्वियां, एक लाख त्रय सहस कहीं।
ये 'पद्मा' गणिनी आज्ञा में, निज आत्म तत्त्व में लीन रहीं।।
सोलह कारण भावना भाय, तीर्थंकर पुण्य कमाती हैं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती, भव्यों के कर्म जलाती हैं।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य पद्मागणिनीप्रमुखएकलक्षत्रयसहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अनंत के यहाँ आर्यिका, एक लाख अठ सहस कहीं।
गणिनी माँ 'सर्वश्री' उनमें, सब शील गुणों की खान कहीं।।
इनको पूजें सुर नर किन्नर, वीणादिक वाद्य बजा करके।
अप्सरियाँ नृत्य करें सुंदर, इनके गुण मणि गा गा करके।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य सर्वश्रीगणिनीप्रमुखएकलक्ष-अष्टसहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ के निकट 'सुव्रता' गणिनी के अनुशासन में।
बासठ हजार चउशतक आर्यिका, नित तत्पर व्रत पालन में।।

तप त्याग अकिंचन ब्रह्मचर्य, धर्मों से शक्ति बढ़ाती हैं।
निज पाणि पात्र में लें आहार, मुनिव्रत चर्या सु निभाती हैं।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य सुव्रतागणिनीप्रमुखद्विषष्टिसहस्रचतुःशत-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ के समवसरण, में साठ हजार तीन सौ हैं।
गणिनी 'हरिषेणा' माता भी, निज गुण से सुर नर मन मोहें।।
ये परमशांति पाने हेतु, निज समतारस को चखती हैं।
इनकी आहारदान पूजा, भक्तों में समरस भरती हैं।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य हरिषेणागणिनीप्रमुखषष्टिसहस्रत्रयशत-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ के यहाँ साठ, हजार तीन सौ पचास हैं।
आर्यिका 'भाविता' प्रमुख मान्य, निजगुण से भविजन मन मोहें।।
उपचार महाव्रत हैं इनके, इक साड़ी मात्र परिग्रह से।
गुणस्थान पाँचवाँ देशविरत, होता है पूजूँ भक्ती से।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य भावितागणिनीप्रमुखषष्टिसहस्रत्रयशत्पंचाशत-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर जिन के यहाँ आर्यिकायें, सब साठ हजार बखानी हैं।
'कुंथुसेना' गणिनी इनकी, ये उज्ज्वल गुणरजधानी हैं।।
इनके वचनामृत भविजन को, पुष्टी तुष्टी शांती देते।
जो इनकी पूजा करते हैं, उनके सब पातक हर लेते।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य कुंथुसेनागणिनीप्रमुखषष्टिसहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ के तीरथ में, पचपन हजार साध्वी मानीं।
गणिनी 'बंधूसेना' उनमें, सबको शिक्षा दें कुशलानी।।
ये सम्यग्दर्शन से विशुद्ध, निज पर भेद ज्ञान धारें।
चारित निर्दोष पालती हैं, इन पूजत रोग शोक टारें।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य बंधुसेनागणिनीप्रमुखपंचपंचाशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिन के सभा बीच, पच्चास हजार आर्यिका हैं।
उनमें सु 'पुष्पदत्ता' प्रधान, सब निज शुद्धात्म साधिका हैं।।
रस रूप गंध स्पर्श शून्य, निज आत्मा का चिंतन करतीं।
इनके गुण गाते चक्रवर्ति, ये भक्तों के भवभय हरतीं।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य पुष्पदत्तागणिनीप्रमुखपंचाशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिन के समवसरण में ये, साध्वी पैंतालिस सहस कहीं।
गणिनी 'मार्गिणी' मान्य उनमें, ये निजानंद सुख मग्न कहीं।।
भक्तों को शिवपथ दिखलाती, पापों से रक्षा करती हैं।
वात्सल्यमयी माता सच्ची, इन पूजा नवनिधि भरती हैं।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य मार्गिणीगणिनीप्रमुखपंचचत्वारिंशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमीप्रभु समवसरण में ये, चालीस हजार बखानी हैं।
उनकी गणिनी 'राजुलदेवी', पातिव्रत धर्म निशानी हैं।।
हलधर नारायण चक्रवर्ती, इंद्रादिक इनको नमते हैं।
महिलाओं में ये चूड़ामणि, इनका हम वंदन करते हैं।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य राजमतीगणिनीप्रमुखचत्वारिंशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ के निकट आर्यिका, अड़तिस सहस मान लीजे।
उनमें 'सुलोचना' गणिनी हैं, स्तुति से मन पवित्र कीजे।।
इनके गुण अमलवस्त्र उज्ज्वल, मन धवल शुक्ल लेश्या शोभें।
इनकी पूजा भक्ती करके, हम शिवपुर के सब सुख भोगें।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य सुलोचनागणिनीप्रमुखअष्टत्रिंशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वीरप्रभू की सभा बीच, छत्तीस हजार आर्यिका हैं।
मां सती 'चंदना' गणिनी हैं, सब संयम रत्न साधिका हैं।।

इनको वंदामी कर करके, मैं शिवपथ प्रशस्त कर लेऊँ।
मेरा संयम निर्दोष पले, गुरुचरण हृदय में रख लेऊँ।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः चंदनागणिनीप्रमुखषट्त्रिंशत्सहस्र-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

लाख पचास छप्पन सहस, दो सौ तथा पचास।
समवसरण की साध्वियां, और अन्य भी खास।।
अट्ठाइसों मूलगुण, उत्तर गुण बहुतेक।
धारें सबहीं आर्यिका, नमूँ नमूँ शिर टेक।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखपंचाशल्लक्ष-षट्पंचाशत्सहस्रद्वयशतपंचाशत्-आर्यिकाचरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में, चतुर्थ काल से लेकर भी।
इस पंचमकाल के अंतिम तक, सर्वश्री संयतिका होंगी।।
ब्राह्मी माता से सर्वश्री, माता तक जितनी संयतिका।
जो हुईं हो रहीं होवेंगी, मैं जजूँ भक्ति भवदधि नौका।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थचतुर्थकालादिपंचमकालान्त्यपर्यंतब्राह्मी-गणिनीप्रमुखप्रभृतिसर्वश्री-आर्यिकापर्यंतसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

द्वितीय वलय में

जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र की आर्यिकाओं के अर्घ्य

(2 अर्घ्य)

जंबूद्वीप में उत्तरी, क्षेत्रैरावत मान्य।
पुष्पांजलि से मैं जजूं, सर्व आर्यिका मान्य।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

जंबूद्वीप के ऐरावत में, चौबीस तीर्थंकर संप्रति के।
उन बालचंद्र प्रभु से लेकर, श्रीवीरसेन तीर्थंकर के।।
तीर्थंकर समवसरण में ही, गणिनी व आर्यिकायें जो थी।
उन सबको अर्घ्य चढ़ा पूजूं, वे उन भक्ती संयमनिधि देगी।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रचतुर्थकालस्थ–वर्तमानकालीन–श्रीबालचंद्रनाथ-सुव्रतनाथ–अग्निसेननाथ–नंदिसेननाथ–श्रीदत्तनाथ–व्रतधरनाथ–सोमचंद्रनाथ घृतदीर्घनाथ–शतायुष्यनाथ–विवासितनाथ–श्रेयोनाथ–विश्रुतजलनाथ–सिंहसेननाथ–उपशांतनाथ–गुप्तशासननाथ–अनंतवीर्यनाथ–पार्श्वनाथ–अभिधाननाथ–मरुदेवनाथ–श्रीधरनाथ–शामकंठनाथ–अग्निप्रभनाथ–अग्निदत्तनाथ–वीरसेननाथपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-प्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस ऐरावत में चतुर्थकाल से, लेकर दुःषमकाल तक भी।
गणिनी माता संयतिकायें, जो हुईं हो रहीं होवेंगी।।
उन सभी आर्यिकाओं की भी, मैं आज यहीं अर्चना करूं।
पंचमकालान्त्य धर्मकन्या, सबको वंदूं निज ध्यान धरूं।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–ऐरावतक्षेत्रस्थचतुर्थकालादिपंचमकालान्त्यपर्यंत-गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

ऐरावत में आर्यिका, सबको वंदन हेतु।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूं, श्रद्धा भक्ति समेत।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–ऐरावतक्षेत्रस्थचतुर्थकालादिपंचमकालान्त्यपर्यंत-गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

तृतीय वलय में जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र की आर्यिकाओं के अर्घ्य

(32 अर्घ्य)

–दोहा–

बत्तिस देश विदेह में, बत्तिस आरजखंड।
गणिनी मात व आर्यिका, जजूँ पुष्प विकिरंत।।1।।

इति मंडलस्योपरि तृतीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

-शंभुछंद-

कच्छा विदेह के आर्यखंड, में क्षेमा नगरी रजधानी।
उस शाश्वत कर्मभूमि में नित, तीर्थंकर होते शिवगामी।।
मुनिगण होते गणिनी माता, आर्यिकायें होती रहती हैं।
हम उनको पूजें अर्घ्य चढ़ा, संयम की लब्धि मिलती है।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे क्षेमानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है देश सुकच्छा आर्यखंड, मधि क्षेमपुरी नगरी जानो।
उसमें नित होते तीर्थंकर, वहाँ शाश्वत कर्मभूमि मानो।।
मुनिगण गणिनी माता व, आर्यिकायें होती हैं सदा।
उन सबकी पूजा करने से, हो सब पापों का अंत यहाँ।।2।।

ॐ ह्रीं सुकच्छादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे क्षेमपुरीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है देश महाकच्छा विदेह, उस आर्यखंड के ठीक बीच।
विख्यात अरिष्टा नगरी में, तीर्थंकर होते जगत ईश।।
उनमें गणिनी संयतिका को, प्रणमूँ मैं भक्ति भाव पूर्वक।
निज आत्मानंद स्वभावी हैं, उनको नित पूजूं रुचिपूर्वक।।3।।

ॐ ह्रीं महाकच्छादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे अरिष्टानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कच्छावति देश विदेह मध्य, आरजखंड बीच अरिष्टपुरी।
इस नगरी में हों तीर्थंकर, जो धर्मतीर्थ के हैं चक्री।।
वहां मुनिगण गणिनी माता को, आर्यिकाओं को वंदन करके।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, वे भक्तों को संयम निधि दें।।4।।

ॐ ह्रीं कच्छावतीदेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे अरिष्टपुरीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवर्ता देश विदेह कहा, उसमें आंरजखंड शाश्वत है।
उनके मधि है खड्गा नगरी में तीर्थंकर धर्मतीर्थ पति हैं।।
वहाँ मुनिगण गणिनी संयतिका, उनकी भक्ती अर्चा करते।
निज परमाह्लाद प्रगट होता, जिसके बल पूर्ण सुखी बनते।।5।।

ॐ ह्रीं आवर्तादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे खड्गानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश लांगलावर्ता है, उसमें इक आर्यखंड उत्तम।
तीर्थंकर चक्री नारायण, प्रतिनारायण बलदेवोत्तम।।
ये पुरुष शलाका वहाँ नित्य, मंजूषा नगरी में होते।
यहाँ गणिनी माता आर्यिकायें, उनको पूजें हम नत होके।।6।।

ॐ ह्रीं लांगलावर्तादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे मंजूषानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कला देश सप्तम विदेह, उसमें जो आरजखंड रहे।
इस बीच औषधी नगरी है, उसमें तीर्थंकर सतत रहे।।
वहाँ आर्यिकायें गणिनी माता, नित मोक्ष मार्ग दिखलाती हैं।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, हमको वह राह दिखाती हैं।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्कलादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे औषधीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कलावती अष्टमविदेह, इसमें छः खण्ड कहे जाते।
है आर्य खण्ड में पुंडरीकणी, नगरी उसमें सुर आते।।

इसमें मुनिगण गणिनीमाता, संयतिकायें भव दुख हरती।
श्री सीमन्धर प्रभु वर्तमान, इन सबकी पूजा भव हरती।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्कलावतीदेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे पुण्डरीकिणीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद–

वत्सादेशविदेह, आर्य खण्ड है उसमें।
पुरी सुसीमा एक, रजधानी है उसमें।।
मुनी आर्यिकावंद्य, मैं पूजूं नित रुचिकर।
युगमंधर भगवान, विचरें अभी वहाँ पर।।9।।

ॐ ह्रीं वत्सादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे सुसीमानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवत्सारम्य, आर्यखण्ड उसमें हैं।
पुरी कुण्डला एक, तीर्थंकर उसमें हैं।।
गणिनी श्रमणीमात, उन सबको मैं पूजूँ।
आत्म सुधारस पाय, भव–भव दुःख से छूटूँ।।10।।

ॐ ह्रीं सुवत्सादेशविदेहसंबंधि-आर्यखण्डे कुण्डलानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावत्सा शुभदेश, उसके आरजखंड में।
अपराजिता प्रसिद्ध, नगरी है उस मधि में।।
तीर्थंकर भगवान, जन्म वहीं पर लेते।
गणिनी श्रमणी मात, पूजत सब सुख देते।।11।।

ॐ ह्रीं महावत्सादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे अपराजितानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सावतीविदेह उसके आरजखंड में।
तीर्थंकर नित होय नगरी प्रभंकरा में।।
मुनिगण गणिनी मात, संयतिकायें वहाँ पे।
पूजूँ भक्ति समेत, छूटूँ भवभव दुःख से।।12।।

ॐ ह्रीं वत्सावतीदेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे प्रभंकरानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्यादेश विदेह, आर्यखण्ड है उसमें।
अंका नगरी नित्य, तीर्थंकर हो उसमें।।
मुनिगण गणिनी मात, आर्यिकायें क्षेमंकर।
उनको अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ सौख्य हितंकर।।13।।

ॐ ह्रीं रम्यादेशविदेहसंबंधि-आर्यखण्डे अंकानगर्याम् गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुरम्या रम्य, आर्यखंड उसमें है।
तीर्थंकर से युक्त, पद्मावति नगरी है।।
मुनिगण गणिनी मात आर्यिकायें हैं वहाँ पे।
पूजूँ भक्ति समेत, मेरे मन को शोधें।।14।।

ॐ ह्रीं सुरम्यादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे पद्मावतीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया सुभदेश, नगरी शुभा वहाँ पर।
तीर्थंकर परमेश, होते रहते सुखकर।।
मुनिगण गणिनी मात, आर्यिकाओं की भूमी।
उन सबको नित पूजूँ, मिले हमें शिवभूमी।।15।।

ॐ ह्रीं रमणीयादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे शुभानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश मंगलावति में, आर्यखंड मधि नगरी।
रत्न संचया नाम, तीर्थंकर गुण लहरी।।
मुनिगण गणिनी मात, आर्यिकायें सुखदायी।
पूज हरूँ भवक्लेश, सुख पाऊँ अतिशायी।।16।।

ॐ ह्रीं मंगलावतीदेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे रत्नसंचयानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

पद्मा देश विदेह में, आर्यखण्ड के मध्य।
अश्वपुरी में तीर्थंकर, आर्यिकायें जग वंद्य।।7।।

ॐ ह्रीं पद्मादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे अश्वपुरीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुपद्मा खंड षट्, आरजखंड के मध्य।
सिंहपुरी में तीर्थंकर, आर्यिकायें जग वंद्य।।18।।

ॐ ह्रीं सुपद्मादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे सिंहपुरीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महापद्मा वहाँ, आर्यखंड के मध्य।
महापुरी में तीर्थंकर, जजूँ आर्यिका नित्य।।19।।

ॐ ह्रीं महापद्मादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे महापुरीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश पद्मकावति वहां, आर्यखंड के मध्य।
विजयपुरी में तीर्थंकर, जजूँ आर्यिका नित्य।।20।।

ॐ ह्रीं पद्मकावतीदेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे विजयपुरीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंखा देश विदेह में, आर्यखंड के बीच।
अरजानगरी में जजूँ, आर्यिकायें नतशीश।।21।।

ॐ ह्रीं शंखादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे अरजानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नलिनी देश विदेह में, आर्यखंड के बीच।
विरजा नगरी में जजूँ, आर्यिकायें नत शीश।।22।।

ॐ ह्रीं नलिनीदेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे विरजानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुदा देश विदेह के, आर्यखंड में नित्य।
पुरी अशोका में जजूँ, आर्यिकायें हों नित्य।।23।।

ॐ ह्रीं कुमुदादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे कुमुदानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरिता देश विदेह में, आर्यखंड विख्यात।
वीतशोक नगरी वहाँ, आर्यिकायें हैं आज।।24।।

ॐ ह्रीं सरितादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे वीतशोकानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई–

वप्रादेश विदेह महान्, उसमें आर्यखंड सुखदान।
विजयानगरी में तीर्थेश, आर्यिकाओं को जजूँ हमेश।।25।।

ॐ ह्रीं वप्रादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे विजयानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवप्रा कहा विदेह, उसके आर्यखंड में येह।
नगरी वैजयंति सुखदान, संयतिका पद जजूँ महान।।26।।

ॐ ह्रीं सुवप्रादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे वैजयंतीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महावप्रा के मध्य, आर्यखंड में नगरी भव्य।
नाम जयंती में तीर्थेश, आर्यिकाओं को नमूँ हमेश।।27।।

ॐ ह्रीं महावप्रादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे जयंतीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश वप्रकावती विदेह, आर्यखंड के बीच वसेय।
अपराजिता नगरि में नित्य, आर्यिकायें हो पूजूँ नित्य।।28।।

ॐ ह्रीं वप्रकावतीदेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे अपराजितानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधा देश विदेह अनूप, आर्यखंड में नगरी भूप।
चक्रपुरी में पूजूँ आज, आर्यिकाओं को पूजूँ आज।।29।।

ॐ ह्रीं गंधोदशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे चक्रपुरीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुगंधा नाम विदेह, उसका आर्यखंड शुभ येह।
खड्गपुरी में होती सदा, आर्यिकायें उन पूजूँ मुदा।।30।।

ॐ ह्रीं सुगंधादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे खड्गपुरीनगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश गंधिला में षट्खंड, उसमें इक शुभ आरजखंड।
पुरी अयोध्या में तीर्थेश, आर्यिकाओं को जजूँ हमेश।।31।।

ॐ ह्रीं गंधिलादेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे अयोध्यानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधमालिनी देश विदेह, आर्यखंड में नगरी येह।
पुरी अवध्या में तीर्थेश, जजूँ आर्यिका भक्ति हमेश।।32।।

ॐ ह्रीं गंधामालिनीदेशविदेहसंबंधि-आर्यखंडे अवध्यानगर्यां गणिनीप्रमुख-सर्वार्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

जम्बूद्वीप विदेह में, समवसरण में मान्य।
गणिनी माता आर्यिका, जजत मिले सुख साम्य।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-प्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

चतुर्थ वलय में–

170 कर्मभूमि की आर्यिकाओं के 170 अर्घ्य

–दोहा–

त्रैकालिक गणिनीप्रमुख, संयतिका श्रुतख्यात।
सद्धर्मकन्या कहीं, नमूं आर्यिका मात।।1।।

अथ चतुर्थवलये मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जम्बूद्वीप सम्बन्धी आर्यिकाओं के 34 अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका–मातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिका–मातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनी–प्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

प्रथमहि जंबूद्वीप में, कर्मभूमि चौंतीस।
त्रैकालिक सब आर्यिका, नमन करूं नत शीश।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि–भरतैरावतविदेहस्थितचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमि-आर्यखंडेषु त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप सम्बन्धी आर्यिकाओं के 34 अर्घ्य

–दोहा–

पूर्वधातकी खंड में, आर्यिकायें त्रयकाल।
पुष्पांजलि से पूजते, कटें कर्म जंजाल।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

त्रैकालिक सब आर्यिका, पूर्वधातकी खंड।
कर्मभूमि चौंतीस में, पूर्ण अर्घ्य से वंद्य।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि–भरतैरावतविदेहक्षेत्रस्थितचतुस्त्रिंशत्कर्म-भूमिआर्यखंडेषु त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

पश्चिमधातकीखण्ड द्वीप सम्बन्धी आर्यिकाओं के 34 अर्घ्य

–दोहा–

पश्चिम धातकिखंड में, आर्यिकायें श्रुतमान्य।
पुष्पांजलि से पूजते, मिल आत्मसुख साम्य।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।83।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धि–गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

अपर धातकीखंड में, कर्मभूमि चउ संघ
पूर्ण अर्घ्य से मैं जजूं, सर्व आर्यिका संघ।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधि–भरतैरावतविदेहक्षेत्रस्थितचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमि-आर्यखंडेषु त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वपुष्करद्वीप संबंधी आर्यिकाओं के 34 अर्घ्य

–दोहा–

पूरब पुष्करद्वीप में, आर्यिकायें जगवंद्य।
पुष्पांजलि से पूजते, मिटे सकल जगद्वंद।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कच्छविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।109।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।110।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।111।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।112।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।113।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।114।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।115।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।116।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।117।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।118।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।119।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।120।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।121।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।122।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।123।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।124।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।125।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।126।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।127।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।128।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।129।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।130।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।131।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।132।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।133।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।134।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।135।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।136।।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

पूरब पुष्करद्वीप में, कर्मभूमि चौंतीस।
त्रैकालिक सब आर्यिका, वंदन हो नतशीश।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि–भरतैरावतविदेहक्षेत्रस्थितचतुस्त्रिंशत्कर्म–भूमि-आर्यखंडेषु त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमपुष्करद्वीप सम्बन्धी आर्यिकाओं के 34 अर्घ्य

–दोहा–

पश्चिम पुष्कर द्वीप में, सर्व आर्यिका संघ।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले रत्नत्रय वंद्य।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–भरतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।137।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।138।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।139।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।140।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।141।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।142।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।143।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।144।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।145।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।146।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।147।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।148।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।149।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।150।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।151।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।152।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।153।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।154।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।155।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।156।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।157।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।158।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।159।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।160।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।161।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।162।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।163।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।164।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।165।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।166।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।167।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।168।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिक–गणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।169।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धि–गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकामातृभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।170।।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

पश्चिम पुष्करद्वीप में, कर्मभूमि अभिराम।
संयतिकाओं को जजूं, मिले निजातम धाम।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि–भरतैरावतविदेहक्षेत्रस्थितचतुस्त्रिंशत्कर्म-भूमि-आर्यखंडेषु त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभुछंद–

ये पंच भरत पंचैरावत हैं, औ इक सौ साठ विदेहों में।
ये इक सौ सत्तर कर्मभूमि, चउसंघ रहें इन क्षेत्रों में।।
गणिनी संयतिका त्रैकालिक, ये कहीं अनंतानंतों हैं।
पूर्णार्घ्य चढ़ाकर मैं पूजूं, ये वंदनीय श्रुत वर्णे हैं।।6।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतषष्ट्यधिकशतविदेहक्षेत्रसंबंधि–सप्तत्यधिकशत–कर्मभूमि-आर्यखंडेषु त्रैकालिकगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकाभ्यो नमः।

जयमाला

–त्रिभंगी छंद–

जय जय जिन श्रमणी, गुणमणि धरणी, नारि शिरोमणि सुरवंद्या।
जय रत्नत्रयधनि, परम तपस्विनि, स्वात्मचिंतवनि त्रय संध्या।।

मुनि सामाचारी, सर्व प्रकारी, पालनहारी अहर्निशी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, तुम गुण गाऊँ, निजपद पाऊँ ऊर्ध्वदिशी।।1।।

–स्रग्विणी छंद–

धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं करूं मात! वंदामि तुमको यहाँ।।
आप सम्यक्त्व से शुद्ध निर्दोष हो।
शास्त्र के ज्ञान से पूर्ण उद्योत हो।।2।।

शुद्ध चारित्र संयम धरा आपने।
श्रेष्ठ बारह विधा तप चरा आपने।।धन्य.।।3।।

एक साड़ी परिग्रह रहा शेष है।
केश लुंचन करो आर्यिका वेष है।।धन्य.।।4।।

आतपन आदि बहु योग को धारतीं।
क्रोध कामारि शत्रु सदा मारतीं।।धन्य.।।5।।

अंग ग्यारह सभी ज्ञान को धारतीं।
मात! हो आप ही ज्ञान की भारती।।धन्य.।।6।।

भक्तजनवत्सला धर्म की मूर्ति हो।
जो जजें आपको आश की पूर्ति हो।।धन्य.।।7।।

मात ब्राह्मी प्रभृति चंदना साध्वियाँ।
अन्य भी जो हुई हैं महासाध्वियाँ।।धन्य.।।8।।

मात सीतासती सुलोचना द्रौपदी।
रामचंद्रादि इंद्रादि से वंद्य भी।।धन्य.।।9।।

चंद्र समकीर्ति उज्ज्वल दिशा व्यापती।
सूर्य सम तेज से पाप तम नाशतीं।।धन्य.।।10।।

सिंधुसम आप गांभीर्य गुण से भरीं।
मेरु सम धैर्य भू-सम क्षमा गुण भरीं।।धन्य.।।11।।

बर्फ सम स्वच्छ शीतलवचन आपके।
श्रेष्ठ लज्जादि गुण यश कहें आपके।।
आप सम्यक्त्व से शुद्ध निर्दोष हो।
शास्त्र के ज्ञान से पूर्ण उद्योत हो।।12।।

आर्यिका वेष से मुक्ति होवे नहीं।
संहनन श्रेष्ठ बिन कर्म नशते नहीं।।धन्य.।।13।।

सोलवें स्वर्ग तक इंद्र पद को लहें।
फेर नर तन धरें साधु हों शिव लहें।।धन्य.।।14।।

जैन सिद्धांत की मान्यता है यही।
संहनन श्रेष्ठ बिन शुक्ल ध्यानी नहीं।।धन्य.।।15।।

अंबिके! आपके नाम की भक्ति से।
शील सम्यक्त्व संयम पलें शक्ति से।।धन्य.।।16।।

आत्मगुण पूर्ति हेतू जजूँ मैं सदा।
नित्य वंदामि करके नमूँ मैं मुदा।।धन्य.।।17।।

'ज्ञानमति' पूर्ण हो याचना एक ही।
अंब! पूरो अबे देर कीजे नहीं।।धन्य.।।18।।

–घत्ता–

जय जय जिन साध्वी, समरस माध्वी, तुममें गुणमणि रत्न भरें।
तुम अतुलित महिमा, पुण्य सु गरिमा, हम पूजें निज सौख्य भरें।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

–शेर छंद –

जो भव्य गणिनी आर्यिका, की अर्चना करें।
वे सर्व सुगुण रत्न से, निज संपदा भरें।।

साक्षात् प्रभू दर्श करें, स्वात्म सुख भरें।
'सज्ज्ञानमती' से निजात्म, का दरश करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा–

श्री ऋषभदेव से वीर तक, तीर्थंकर भगवान।
सर्वसाधुगण भक्ति से, नमूँ नमूँ शुभ ध्यान।।1।।

मूलसंघ में कुंदकुंद–अन्वय सरस्वति गच्छ।
बलात्कारगण में हुए, सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।2।।

सदी बीसवीं के प्रथम, गुरु महान आचार्य।
चारित्र चक्री श्री–शांतिसागराचार्य।।3।।

इनके पहले शिष्य श्री–वीरसागराचार्य।
प्रथमहि पट्टाचार्य गुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।4।।

गणिनी मात व आर्यिका, का विधान सुखकार।
गणिनी ज्ञानमती रचित, यह भविजन हितकार।।5।।

जब तक जिन शासन अमल, जब तक चउविध संघ।
करो करावो भव्यगण, हो प्रशस्त शिवपंथ।।6।।

।।इति गणिनी आर्यिका विधानं संपूर्णम्।।

।। जैनं जयतु शासनम्।।

गणिनी आर्यिका विधान की आरती

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–चाँद मेरे आजा रे...........

आरती गणिनी माता की
दीपक जलाकर, थाली सजाकर, सब मिल करो आरतिया
आरती.................।।टेक.।।

अज्ञान तिमिर नश जावे, निज ज्ञान किरण पा जाऊँ।
गणिनी माँ की आरति कर, भव आरत से छुट जाऊँ।।
आरती गणिनी माता की.......।।1।।

तीर्थंकर समवसरण की, जो गणिनी माताएँ हैं।
ब्राह्मी से चन्दनबाला, तक उनकी गाथाएँ हैं।।
आरती गणिनी माता की.......।।2।।

आचार्यों के सदृश ही, गणिनी माता होती हैं।
निजसंघ की शिष्याओं के, मिथ्या कल्मष धोती हैं।।
आरती गणिनी माता की.......।।3।।

कंचन का दीप जलाकर, वरदान यही मैं चाहूँ।
''चंदनामती'' निज आतम, में ज्ञान की ज्योति जलाऊँ।।
आरती गणिनी माता की.......।।4।।

गणिनी ज्ञानमती माताजी की वैराग्य भावना

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

-दोहा-

सिद्ध हुए जो भी मनुज, कर्म अरी को जीत।
उनके पद को नमन कर, करूँ सिद्धि से प्रीत।।1।।
भव भव की जो भावना, भाई इस भव माँहि।
वही सफल हो कामना, हो भव का भ्रम नाहिं।।2।।

-शेर छंद-

संसार के दुख से हुए भयभीत जो प्राणी।
उनके लिए हितकारि प्रभु जिनेन्द्र की वाणी।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।3।।

नारी व नर सभी की आतमा है एक सी।
सबमें छिपी भगवान आतमा है एक सी।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।4।।

कुछ पूर्व के संस्कार से वैराग्य मिल गया।
पुरुषार्थ के निमित्त सोया भाग्य खिल गया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।5।।

संसार को तज सकते हैं संसार में रह कर।
जीवन के किसी क्षण में भी वैराग्य ग्रहण कर।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।6।।

माँ को दहेज में मिले इक ग्रंथ को पढ़ा।
जिससे हृदय में ज्ञान औ वैराग्य था बढ़ा।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।7।।

संसार में अनादिकाल से भ्रमण हुआ।
अब पुण्य से जिनधर्म का अवलम्ब मिल गया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।8।।

माता-पिता भाई बहन कोई न हैं अपने।
सोचो तो सभी लोग हैं संसार के सपने।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।9।।

जग में प्रसिद्ध लोक मूढ़ताओं को रोका।
है कर्म का सिद्धान्त अटल शेष सब धोखा।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।10।।

प्रभु भक्ति से टल सकती है अकाल मृत्यु भी।
समझाया सबको इसके सिवा व्यर्थ है सभी।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।11।।

पग पंक में रख धोने से अच्छा है न रखना।
सोचा यही भव पंक में पग ही नहीं रखना।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।12।।

अकलंक के नाटक से ग्रहण की यही शिक्षा।
गृहपंक को तज ले ली ब्रह्मचर्य की दीक्षा।।

वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।13।।

आगे बढ़ीं तो ज्ञानमती मात बन गईं।
इस युग की प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी हुईं।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।14।।

कुछ पूर्व पुण्य से अगाध ज्ञान मिल गया।
स्वयमेव कठिन ग्रंथों का अनुवाद कर दिया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।15।।

चाहे बनाओ शिष्य या तीरथ विकास हो।
संयम पले निर्विघ्न तो सब कुछ ही सार्थ हो।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।16।।

चारित्र चक्रवर्ति शांतिसिंधु से लेकर।
देखा है सात पीढ़ियों से संघ चतुर्विध।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।17।।

कलियुग में त्याग मार्ग है यद्यपि बहुत कठिन।
होता है तो भी साधु और साध्वी का दर्शन।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।18।।

है त्याग से पवित्र जिनकी काया का कण-कण।
सब लाभ लेते उनकी तपस्या का प्रतिक्षण।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।19।।

जिनकी चरणरज से धरा बनती है स्वर्ण सम।
जिन प्रेरणा से होता है जंगल में भी मंगल।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।20।।

जीवन से जिनके सीखना है त्याग तपस्या।
जो हैं प्रसिद्ध बीसवीं सदी की विशल्या।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।21।।

प्रभु नाम जिनके रोम-रोम में है समाया।
प्रभु नाम को ही जिनने विश्व भर में गुंजाया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।22।।

उन ज्ञानमती मात को शत-शत नमन करूँ।
उनके चरण में ''चन्दनामती'' सुमन धरूँ।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।23।।

-दोहा-

यह वैरागी भावना, पढ़ो भव्य मन लाय।
फिर विराग की साधना, करो चित्त हरषाय।।24।।

भजन

प्रज्ञाश्रमणी-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-पंखिड़ा..........

वंदना...............वंदना.............
वंदना करूँ मैं गणिनी ज्ञानमती की।
बीसवीं सदी की पहली बालसती की।।वंदना........

इनके मात-पिता का, गुणानुवाद मैं करूँ।
इनकी जन्मभूमि का भी, साधुवाद मैं करूँ।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वन्दना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना...।।1।।

इनके ज्ञान की प्रशंसा, सारी दुनिया करती है।
इनके नाम की प्रशंसा, पुस्तकों में मिलती है।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।2।।

वीर के युग की ये, लेखिका पहली हैं।
चार सौ ग्रंथों की, लेखिका साध्वी हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।3।।

इनके वात्सल्य में, माँ की ममता भरी।
इनके सानिध्य में, मुझको समता मिली।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।4।।

इनके तप त्याग में, लाभ लेते सभी।
''चन्दना'' भाग्य से, भक्ति करते सभी।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।5।।